Dr. Sunil Kumar "Suman"
Assistant Professor
Dept. of Psychology
D B. College, Jaynagar
L N.M.U. Darbhanga

Dr. Sunil Kumar "Suman"
Assistant Professor
Dept. of Psychology
D B. College, Jaynagar
L N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper - IV
Date - 20-10-20
TO - Next class

Neo - Freudians

Contribution of Erik Erikson

(ii). उत्पन्न संक्रांति या संकट (crisis) का समाधान सामान्यतः सम्बंधित अवधि के अहं गुणों (ego qualities) द्वारा हो जाता है।

(iii). सभी विकासात्मक अवस्थाओं के वर्द्धन तथा परिवर्तन के मनोलैंगिक (phychosexual) तथा मनोसामाजिक (physchosocial) पहलू होते हैं।

(iv). प्रत्येक मनोसमाजिक अवस्था का निर्माण उससे पहले की अवस्था में हुए विकासों से सम्बंधित होता है।

(v). मनोसामाजिक विकास (phychosocial Development) की प्रत्येक अवस्थाओं में कर्मकांडता (ritualization), कर्मकांड (ritual) तथा कर्मकांडवाद (ritualism) होते हैं। इसे इरिकसन तीन और (Erikson's three R's) कहा गया है। कर्मकांडता (ritualization) से तात्पर्य समाज के दूसरे व्यक्ति के साथ सांस्कृतिक रूप से स्वीकृत ढंग से अंतःक्रिया (interaction) करने से होता है। अतः इसका महत्व अनुकूली (adaptive) होता है। कर्मकांड (ritual) से तात्पर्य व्यवस्क समुदाय (adult community) द्वारा आवर्ती (recurring) स्वरुप के महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाने से होता है जिसमे व्यक्ति का ध्यान स्वयं अपने ऊपर ही केंद्रित रहता है। इरिकसन द्वारा प्रतिपादित मनोसामाजिक विकास (phychosocial development) की आठ अवस्थाओं तथा उसमें होने वाले प्रमुख विकासों का वर्णन निम्नांकित है –

1. शैशवावस्था : विश्वास बनाम अविश्वास (Infancy : Trust versus Mistrust)
2. प्रारंभिक बाल्यवस्था : स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता (Early childhood : Autonomy versus Shame)
3. खेल अवस्था : पहलशक्ति बनाम दोषिता (Play age : Industry versus Guilt)

Scanned with CamScanner

4. स्कूल अवस्था : परिश्रम बनाम हीनता (School age : Industry versus inferiority)
5. किशोरावस्था : अहं पहचान बनाम भूमिका संभ्रांति (Adolescence : Ego identity versus role confusion)
6. तरुण व्यवस्कवस्था : घनिष्ठता बनाम विलगन (young adulthood : Intimacy versus Isolation)
7. मध्य व्यवस्कवस्था : जननात्मकता बनाम स्थिरता (Middle adulthood : Generativity versus stagnation)
8. परिपक्वता : अहं संपूर्णता बनाम निराशा (Maturity : Ego integrity versus Despair) इन सबों का वर्णन निम्नांकित है –

1. शैशवावस्था : स्वच्छता बनाम अविश्वास (Infancy : Trust versus mistrust) यह अवस्था जन्म से लेकर एक साल के उम्र तक की होती है और फ्रायड ने मनोलैंगिक विकास (psychosexual development) के मुख्यावस्था (oral stage) से मिलती-जुलती है। इस अवस्था में सबसे पहला अ धनात्मक अहं गुण (positive ego-quality) की इस तरह की भावना का विकास बच्चे में उत्तम मातृक देख-रेख (Maternal care) से उत्पन्न होता है। आशा से तात्पर्य एक ऐसी मनोसामाजिक शक्ति से होती है जिसके सहारे शिशु अपने सांस्कृतिक वातावरण तथा अपने अस्तित्व (existence) को अर्थपूर्ण ढंग से समझने लगता है।

2. प्रारंभिक बाल्यवस्था : स्वच्छता बनाम लज्जाशीलता (Early childhood : Autonomy versus Shame) – यह अवस्था दो साल से लगभग तीन साल की होती है और यह फ्रायड के मनोलैंगिक अवस्था के गुदा अवस्था (anal stage) से मिलती-जुलती है। जब बालक इसे पहले की मनोसामाजिक अवस्था में विश्वास या आस्था (trust) का भाव विकसित कर लेता है, तो उसमें स्वच्छता (autonomy) एवं आत्म-नियंत्रण जैसे शीलगुण अवस्था में आ जाने से उनमें यूरोपेशीय परिपक्वता, सामाजिक विभेद तथा शारीरिक अभिव्यक्ति आदि की क्षमता विकसित हो जाती है और वातावरण को स्वच्छता से अन्वेषण करना प्रारंभ कर देता है। अपने नये गति कौशलों से बच्चा स्वयं भी काफी प्रसन्न तथा प्रोत्साहित होता है इच्छा शक्ति से तात्पर्य एक ऐसी शक्ति होती है जो बच्चों को स्वतंत्र होकर अपना रुचि या पसंद आत्म-संयम बरतने में करता है

Next class